दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): अनिल कुमार यादव

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल न. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 8/ 8/14/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	9	7	6	4	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **Five** questions.*

*Candidate has to attempt all **FIVE** questions.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 124½

टिप्पणी (Remarks): उत्तम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ श्यामसुन्दर द्वारा संकलित "कबीर ग्रंथावली" के 'गुरु को अंग' नामक खण्ड से ~~लिया गया~~ ली गई है। इसके रचनाकार कबीर दास जी हैं।

प्रसंग एवं व्याख्या :- सतगुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कबीर कहते हैं कि गुरु के कारण ही अज्ञान का परदा हट सकता है। आँखों से अज्ञान हटने पर ही मनुष्य उस अगम, अगोचर अनन्त को जान पाता है और अपने जीवन को सफल बना पाता है।

भावगत सौन्दर्य :-
① गुरु की महिमा का वर्णन जो भारतीय में गुरु की महत्ता को स्थापित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) समस्त भक्त कवियों यथा- सूर, तुलसी तथा जायसी के यहाँ भी गुरु का बहुत महत्त्व है

" गुरु सुआ जेहि पथ दिखावा "
- जायसी

(3) कबीर अपनी मूल प्रकृति में भक्त थे। परन्तु फिर भी गुरु, को गोविन्द से ऊपर स्थान दिये

(4) यहाँ सत. ईश्वर अर्थात ब्रह्म को "अनंत" विशेषण द्वारा दिखाया गया है। वह निराकार ब्रह्म है।

शिल्पगत सौन्दर्य:-

(1) दोहा नामक मुक्तक काव्य रूप
(2) भाषा पंचमेल खिचड़ी
(3) प्रतीक रूपों में 'लोचन' व 'उघाड़िया' का प्रयोग।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यो रुँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जू धौं।
बेद पुरान स्मृति सब ढूँढ़ौ, जुवतिन जोग कहूं धौं?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत उधो।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित 'सूर ग्रन्थावली' के 'भ्रमर गीत सार' से ली गयी है। इसके रचयिता सूरदास जी है।

प्रसंग एवं व्याख्या:- कृष्ण के मथुरा चले जाने पर, गोपियाँ फिर भी सगुण कृष्ण से प्रेम करती थी। उधव उन्हे "निरगुण" ईश्वर की उपासना के लिए कहते हैं तो उपालम्भ शैली कहती है कि सगुण ईश्वर का मार्ग अत्यन्त सीधा है। निर्गुण के रास्ते में बहुत बाधाए हैं। वे कहती हैं कि वेद-पुराण में कहीं भी स्त्रीयों को योग करते हुए नहीं दिखाया गया है। वे स्वयं को अज्ञानी बताकर कहती है कि उन्हे दूध व छाछ का ज्ञान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुब्जा और कृष्ण दोनों पर व्यंग्य करते हुए अक्रूर को भी कोसती हैं कि वे इनके मूलधन कृष्ण को तो ले गये। और ब्याज के रूप में उद्धव को भेज दिया।

भावगत सौन्दर्य:-

① भ्रमरगीत परम्परा में सगुण को सरल, सीधा और आसानी से उपलब्ध होने वाला बताया गया है।

② निर्गुण, सगुण की राह में 'कंटक' के समान है।

③ निर्गुण, सगुण द्वन्द्व में, सगुण की श्रेष्ठता सिद्ध की।

④ उपालम्भ शैली में पद है।

शिल्पगत सौन्दर्य:-

① सूरदास द्वारा लीला पद के माध्यम से काव्य रूप का नया प्रयोग।

(ii) भाषा में ब्रज की मिठास है।

(iii) प्रतीकात्मक - 'मधुप'- भौंरा, कृष्ण और उद्धव सबका प्रतीक है।

(iv) उपमा और रूपक अलंकार का सुन्दर प्रयोग

(v) "मूलधन" और "ब्याज" के माध्यम सामाजिक चेतना का स्तर दिखाई देता है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरै भौन में करत हैं, नैननु ही सों बात।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत दोहा, रीतिकालीन काव्य धारा के प्रमुख हस्ताक्षर कवि बिहारी की 'बिहारी सतसई' से लिया गया है।

प्रसंग और व्याख्या:-

नायक-नायिका के सभा में बैठकर होने वाले प्रेम व्यवहार का वर्णन है जिसमें मौन भाषा के माध्यम उनकी चेष्टाओं को दिखाने का प्रयास किया गया।

नायक नायिका से कहता है तो वह मना कर देती है, इस पर नायक मोहित हो जाता है, जिससे नायिका को खीझ उत्पन्न हो जाती है। इसके बाद जैसे ही नायक-नायिका के नयन मिलते हैं, दोनों का चेहरा खिल आता है, नायिका शर्मा जाती है। इस प्रकार पूरे भरे भवन दोनों केवल नैनों के माध्यम से ही प्रेम की बात कर रहे होते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य :-

① बिहारी की प्रेम दृष्टि पूरी तरह से भोगमूलक व उपयोगितावादी है।

② संयोग शृंगार से युक्त दोहा है।

③ प्रेम की अभिव्यक्ति, भरे-भवन में, स्थिति में अत्यन्त नाटकीय प्रतीत होती है।

काव्यगत- शैली सौन्दर्य :-

① दोहा नामक मुक्तक काव्य रूप

② एक साथ 7 सात क्रियाओं को अपनी भाषा का विषय बना लिया है।

③ भाषा अत्यन्त बिम्बात्मक है। नायक - नायिका की प्रत्येक चेष्टा का वर्णन।

④ भाषा में अत्यधिक और अनावश्यक चमत्कार लाने की कोशिश।

⑤ अत्यन्त सांगोपांग 'नावक के तीर' जैसी क्षमता का परिचय।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त की प्रतिनिधि रचना "भारत-भारती" से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या :-
'अतीत खण्ड' में राष्ट्रकवि गुप्त जी भारत की प्राचीन महानता का वर्णन कर रहे हैं।
वे कहते हैं कि भारत वर्ष विश्व में सबसे ज्यादा ऊंचाई पर था। वे प्रश्नवाचक शैली में बताते है कि वह भारत ही है जो भूलोक का गौरव और प्रकृति की लीला को स्थान देता है, यहाँ पर ही हिमालय है और गंगा नदी है यही ऋषियों की भूमि है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य:-

① भारत की प्राचीन सम्पन्नता और सर्वोच्चता का बहुत सुन्दर वर्णन किया गया है।

② अतीत के प्रति रोमानियत का भाव है। यही भाव, भारतेन्दु के यहाँ भी दिखाई पड़ता है। "भारत दुर्दशा" नाटक में।

③ अतीत के उत्कर्ष और वर्तमान के अपकर्ष का एक-दूसरे के अनुपात में वर्णन।

शिल्पगत विशेषताएं:-

① काव्य में "वैचारिक महाकाव्य" की झलकियाँ यहीं आ सकती हैं।

② भाषा-द्वंद्व की समाप्ति, खड़ी बोली में रचना।

③ प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग।

④ "भू-लोक", "लीला-स्थल" आदि की सामासिक क्षमता का प्रयोग।

⑤ शब्दावली तत्सम प्रधान।

5½ / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ महाकवि निराला की प्रतिनिधि कविता "राम की शक्ति पूजा" से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या:-

"राम-रावण के अपराजेय समर" के बाद युद्ध समाप्ति पर वापस लौटती सेना तथा व्याप्त निराशा का वर्णन है।

अमावस्या की रात के आसमान में घना अंधकार है पवन रुक सी गयी है। दिशा का पता नहीं चल रहा है समुद्र रुपी रावण गरज रहा है भू-धर जैसे राम ध्यान मग्न है एक मशाल जल रही है वही एकमात्र आशा की उम्मीद है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य:-

① वाचन सौंपती सेना के समय की बाहरी परिस्थितियों में अंधकार, निराशा, अज्ञातता है। यह मानसिक स्तर पर राम के पक्ष की निराशा को भी व्यक्त कर रही है।

② समस्त आकृतियाँ राम के प्रतिकूल प्रतीत हो रही हैं। केवल एक मशाल जल रही है वह ध्यान मग्न राम हैं।

③ कविता में नाटकीयता का प्रधान बिन्दु है। यहाँ तनाव अपने चरम है।

शिल्पगत सौन्दर्य:-

① लम्बी कविता, मात्र रूप के स्तर पर।

② भाषा अत्यन्त तत्समी प्रधान

③ सांश्लिष्ट बिम्ब का प्रयोग, विराट बिम्ब

④ "अप्रतिहत गरज" - रावण के अट्टहास भी है।

⑤ "भूधर ज्यों" ध्यान मग्न - राम का प्रतीक है।

⑥ उपमा अलंकार के रूप - "ज्यों"

⑦ प्रकृति का बिम्बात्मक रूप।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) पीछै लागा जाई था, लोक वेद के साथि,
आगे तैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ मध्यकालीन भक्ति कवि कबीरदास के "गुरु के अंग" नामक खण्ड से हैं जिन्हें श्यामसुन्दर दास ने 'कबीर ग्रन्थावली' में संकलित किया है।

प्रसंग व व्याख्या :-

गुरु किस प्रकार अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाते हैं उसका वर्णन है।

कबीरदास जी अपने जीवन को सामान्य लोगों की तरह ही रहे होते हैं। उनकी आँखों पर अज्ञान रूपी परदा पड़ा होता था। जैसे ही इन्हें गुरु मिलते हैं। ज्ञान-रूपी दीपक उनके हाथ में थमा देते हैं, जिससे उनके जीवन का अज्ञान रूपी अंधकार समाप्त हो जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौंदर्य :-

① गुरु की महत्ता का वर्णन।
② गुरु को गोविन्द से ऊँचा स्थान प्रदान करते _
" गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो दिखाय"।
③ कबीर गुरु को "सत गुरु" कहते हैं क्योंकि वह सत्य का ज्ञान कराता है।
④ चारों भक्त कवि गुरु को महत्त्व देते हैं।
⑤ "जब अंधियारा मिट गया जब दीपक देख्यो माहिं।"

शिल्पगत :-
① दोहा नामक छन्द
② भाषा सधुक्कड़ी व संध्याभाषा का प्रयोग।
③ प्रतीक रूप में - "दीपक" ज्ञान का
④ भाषा शब्दावली - तद्भवी।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।

1 उत्तर

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ जायसी कृत 'पद्मावत' के "नागमती-वियोग वर्णन" से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: रत्नसेन द्वारा सिंघल द्वीप चले जाने पर नागमती का वियोग का बारहमासा वर्णन।
वर्षा ऋतु से ठीक पहले आषाढ़ से ही वर्षा की शुरुआत मानी जाती है। नागमती कहती है कि आषाढ़ ऋतु में बादलों ने गगन को घेर लिया है मेढ़क बोलने लगे हैं, बगु पक्षीयों में चारों उल्लास है, आद्रा नक्षत्र में बीज को भुनाया जा रहा है वह अपने प्रिय के बिना है उसको आदर देने वाला कोई दूसरा नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौंदर्य :-

(1) विरह वर्णन में मार्मिक चेतना है।

(2) विरह का आरोप प्रकृति पर कर दिया गया है।

(3) नागमती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य की अद्वितीय ~~उपलब्धि~~ उपलब्धि है।

(4) माह - आषाढ़ और नक्षत्र आर्द्रा का प्रयोग जायसी की लोक प्रतिबद्धता तथा लोक ज्ञान को अभिव्यक्त करता है।

शिल्पगत सौंदर्य :-

(I) भाषा में अवधी की मिठास।

(II) प्रकृति व मानव के अन्तर्सम्बन्धों का उद्घाटन।

(III) उपमा और उत्प्रेक्षा का सुन्दर प्रयोग।

(IV) "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में आषाढ़ को ही नाटक का प्रस्थान बिंदु बताया गया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल-
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद की रचना 'कामायनी' से ली गयी हैं।

के श्रद्धा सर्ग

प्रसंग व व्याख्या:-

प्रस्तुत पंक्तियाँ मनु द्वारा देवीय सभ्यता के विनाश पर अपनी निराशा व चिन्ता को व्यक्त किया जाता है तो श्रद्धा मे उर्जा का संचार करते हुए कहती है कि उसे इसे अभिशाप नहीं समझना चाहिए। ईश्वर की इच्छा के रहस्य को जानने का प्रयास करना चाहिए। वह कहती है कि विश्व में असमानता व विषमता की पीड़ा ही इस दुख- और सुख के चक्र की वाहक है व विकास का यही सत्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य :-

(1) मनुष्य को निराशा और चिन्ता को छोड़कर आशा व विश्वास के साथ ईश्वर की मूल वजह के रहस्य को समझना चाहिए।

(2) विश्व में अशान्ति का कारण - विषमता है, यह विषमता — ज्ञान, इच्छा और कर्म की है। लेकिन आर्थिक व सामाजिक विषमता भी विश्व में अशान्ति लाती है।

(3) मनुष्य की मूल प्रकृति को पकड़ने का प्रयास किया गया।

(4) दुख व गाँधी के दर्शन दुख - और सुख एक सिक्के के दो पहलू है।

(5) "विज्ञान के सत्य" की प्रासंगिकता आज के वैश्वीकरण के युग में भी।

शिल्पगत सौन्दर्य :-

(I) भाषा तत्सम प्रधान।

(II) काव्य रूप - भावनात्मक महाकाव्य

(III) उपमा और रूपक अलंकार

(IV) भाषा की सहायक क्षमता - इच्छा

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अरु करि नेह दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी, जुवतिन को जोग-सँदेस पठाए।।
भले लोग आगे के, सखि री ! परहित डोलत धाए।
वे अपने मन केरि पाइए जे हैं चलत चुराए।।
ते क्यों नीति करत आपुन जे औरनि रीति छुड़ाए?
राजधर्म सब भए सूर जहँ प्रजा न जायँ सताए।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के 'सूरग्रन्थावली' में संकलित "भ्रमर गीत सार" से ली गयी है

प्रसंग व व्याख्या:- गोपियाँ आपस में बात करते हुए कृष्ण पर व्यंग्य कर रही हैं कि वे उन्हे योग के मार्ग के लिए सन्देश पहुँचाते हैं। कृष्ण तो पहले से ही चतुर थे अब तो मधुकर की राजनीति भी पढ़ लिये हैं। उनकी बात, गोपियों की समझ में नहीं आ रही है वे कहती है कि क्यों उन्हें प्रेम मार्ग से हटा रहे हैं, राजधर्म पर भी सवाल करती है कि क्या यही राजधर्म है कि अपनी प्रजा को सताया जाए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भावगत सौन्दर्य एवं शिल्पगत सौन्दर्य

1. "राजनीति में सब जायज" वाले मुहावरे पर चोट की गयी है।
2. निर्गुण व सगुण केन्द्र को दिखाया गया।
3. "राजधर्म" की परिभाषा दी गयी है तो प्रजा का दुख हेना राजधर्म नहीं है पर आज भी उतना ही प्रासंगिक है।
4. तुलसीदास की राजनीतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी 'राजधर्म' में देखा जा सकता है।
5. भाषा में ब्रज की कोमलता है।
6. भाषा - शैली - उपालम्भ ~~काव्य~~ की पराकाष्ठा है।
7. भावप्रीति वक्रता का अद्वितीय उदाहरण।
8. अनुप्रास, अन्त्यानुप्रास का प्रयोग।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) शत घूर्णावर्त, तरंग- भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

सन्दर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिन्दी साहित्य के महाकवि निराला की 'राम की शक्तिपूजा' नामक लम्बी कविता से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या:- "राम-रावण का अपराजेय समर" रहने पर राम की वानरी सेना के मन निराशा व चिन्ता के भाव तथा राम के मन उठ रहे विचारों के तूफान का प्रतीकात्मक वर्णन किया गया है।
समुद्र में चक्रवात उठ रहे हैं वैसे ही राम के मन में "रावण जय भय" का विचार उठता है। एक विचार दूसरे को इसी प्रकार काटता है जैसे समुद्र की लहरें एक दूसरे को तोड़ती हुई आगे बढ़ती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य :-

① समुद्र के माध्यम से राम के अन्दर के द्वन्द्व, निराशा, संताप, व भाव को प्रतीकात्मक रूप व्यक्त किया गया है।

② विचारों व मनोविज्ञान की सुन्दर प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति

③ नाटकीय तनाव को साबित करने वाली पंक्तियाँ।

④ प्रकृति के माध्यम से मनुष्य के मनोभावों को पकड़ने का प्रयास।

⑤ इसी पृष्ठ भूमि में - "शान्ति की मौलिक कल्पना" की आवश्यकता है

शिल्पगत सौन्दर्य :-

① लम्बी कविता की बानगी।

② छन्दों से मुक्त पंक्तियाँ परन्तु लयात्मकता है।

③ संश्लिष्ट व विराट बिम्ब की झांकी

④ प्रकृति का "मनोभावकरण"

⑤ भाषा की समास शैली।

⑥ तत्सम प्रधान भाषा।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कब रु मिलहुगे राम।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ महाकवि कबीर के ~~कुछ~~ "विरह को अंग" से ली गयी है। जो श्यामसुन्दर दास ने "कबीर ग्रन्थावली" इसका संकलन किया है

प्रसंग व व्याख्या :-

ईश्वर से मिलन के बाद उन बिछुड़ जाने पर होने वाले दुख का वर्णन है। कबीर दास, ईश्वर के दर्शन करते है परन्तु जल्द ही वे ब्रह्म से बिछुड़ जाते है इनसे दिन-रात उनके आँसू बहते रहते हैं। जिस प्रकार पपीहा, अपने प्रिय के बिछड़ने पर "पिव-पिव" करता है कबीर भी उसी प्रकार राम अर्थात ब्रह्म से मिलने के लिए राम-राम पुकारते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य सौन्दर्य :-

① ईश्वर से विरह का वर्णन इस सूफी परम्परा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है

② कबीर के 'राम' तुलसी के राम (सगुण) नहीं - "दशरथ सुत तिहु लोक बखाना राम-नाम का मरम है आना," कबीर के राम निर्गुण राम हैं जो उन्हें रामानन्द प्राप्त हुआ था

③ भावनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव

④ भाषा सधुक्कड़ी।

⑤ दोहा छन्द का प्रयोग।

⑥ विरह की यह वेदना - घनानन्द जैसे कवियों में भी देखी जा सकती है

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक
शान्ति कहाँ इस भव को?
"जब तक मनुज-मनुज का यह
सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्र-कवि 'दिनकर' की प्रतिनिधि कविता 'कुरुक्षेत्र' से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या:- कवि कहता है कि विश्व अशांति का मूल कारण मनुष्य-मनुष्य के बीच व्याप्त असमानता है यह असमानता जब तक समाप्त नहीं हो जाती है तब तक न तो संघर्ष खत्म होगा और न ही शान्ति की स्थापना होगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य :-

1) मार्क्सवाद का प्रभाव है। जो संघर्ष के लिए विषमता को मूल कारण मानता है

2) न्यायपोचित वितरण व समानता के द्वारा ही शान्ति की स्थापना की जा सकती है केवल हथियार के बल पर नहीं। यह बात वर्तमान सन्दर्भों में उतनी ही प्रासंगिक है

3) स्वतंत्रता के सपनों को अभिव्यक्त करने वाली पंक्तियाँ

4) जयशंकर प्रसाद भी लिखते हैं—

"विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान।"

5) भाषा तत्सम निष्ठ, सुबोध।

6) समास शैली का प्रयोग।

7) प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमर गीत सार' से ली गयी है जिसके ~~सूर~~ रचयिता सूरदास जी है।

प्रसंग व व्याख्या:- गोपियाँ कृष्ण के वियोग में इतना दुखी है कि वे उद्धव को उलाहना देती है कि मथुरा काजल की कोठरी है वहाँ सभी काले ही रहते है वे कृष्ण, अक्रूर, और सबको काला कहती है। वे यमुना में नहाकर आने को कहती है सूरदास भी कहते है इस प्रकार श्याम के गुण से प्रेम करती है कि गोपियाँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य :-

① सगुण - निर्गुण द्वन्द्व का अद्वितीय काव्य।

② काले शब्द का प्रतीकात्मक प्रयोग - भावना शून्य के अर्थ में।

③ भ्रमर के माध्यम से कृष्ण व उद्धव दोनों पर व्यंग्य करती है

④ उपालंभ शैली का प्रयोग

⑤ भाव द्योतित वक्रता के कारण शुक्लजी द्वारा प्रशंसा की गयी है

⑥ भाषा में ब्रज की मिठास कोमलता व तात्कालिकता।

⑦ "ब्यौरा" व्यंग्य का अद्भुत संयोजी प्रभाव।

⑧ उपमा व उत्प्रेक्षा - "मानहु" का सुन्दर प्रयोग।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

(ङ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ अज्ञेय द्वारा रचित लम्बी कविता "असाध्य वीणा" से ली गयी हैं।

प्रसंग व व्याख्या:- वीणा के बज जाने पर राजा द्वारा प्रियंवद की प्रशंसा की जाती है जिस पर प्रियंवद कहता है कि 'वह तो स्वयं महाँ शून्य में डूब गया था। वीणा के माध्यम से वह अपने को उस अनाम महामौन को सौंप दिया था। वह एक गात अविभाज्य है जो सब लोगों में

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाता है इसमें आत्मा कोई भी नहीं है।

काव्यगत सौन्दर्य:-

① इन पंक्तियों में अज्ञेय पर ज़ेन बुद्धिज्म का प्रभाव देखा जा सकता है।

② अज्ञेय में व्यक्त होने वाले रहस्यवाद का भी आस्वाद लिया जा सकता है।

③ T.S. इलियट के "वस्तुपरक सिद्धान्त" का प्रभाव — "जो कापने सुना वह मेरा नहीं था"।

④ भाषा में तत्सम शब्दावली की प्रधानता।

⑤ भारतीय वेदांत का प्रभाव भी है।

⑥ बिम्बात्मकता शैली व प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी, मानों झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गई थी। काना कहने से काने को जो दुःख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' से ली गयी हैं।

प्रसंग व व्याख्या :-
उपन्यास के प्रारम्भ में होरी द्वारा खुद को मरने की बात कहने पर धनिया यही सोचती है कि वह अपने सुहाग होरी के द्वारा ही सभी दुखों से लड़ जाने की क्षमता पाती है। यथार्थ यही है ~~कि~~ यदि होरी उसके जीवन से चला जायेगा तो उसके पास क्या बचेगा? उसका कोई सहारा शेष नहीं बचेगा। यह बात होरी के शब्दों से तय हो जाती है धनिया का एकमात्र सहारा छीन लिया जाता था

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य:-

(1) उपन्यास के प्रारम्भ में धनिया का सोचना, उपन्यास का अन्त आते-आते होरी की त्रासद मृत्यु से, इसका यथार्थ बन जाता है।

(2) भारतीय परम्परा में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में एक-दूसरे की पूरकता का वर्णन।

(3) नारी की पुरुष पर निर्भरता को प्रेमचन्द द्वारा दिखाया गया है।

(4) भाषा की हिन्दुस्तानी शैली।

(5) तद्भव शब्दावली की प्रधानता।

(6) लोक मुहावरा - "काना को काना कहने पर जो दुःख होता है"

(7) प्रेमचन्द का आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर मुड़ना देखा जा सकता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश 'राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित 'एक दुनिया समानान्तर' की कहानी "चीफ की दावत" से लिया गया है रचेता भीष्म साहनी है

प्रसंग व व्याख्या :- अपने बॉस के अपने घर दावत देने के बाद, अंत पर अपनी माँ का छुपा दिया जाता है तब प्रस्तुत इस माँ की दशा का वर्णन किया गया है अपनी घोर उपेक्षा, तिरस्कार व अपमान के बाद भी माँ, अपने बेटे के दीर्घ आयु होने की प्रार्थना करती है वह रोती है लेकिन अपने बेटे को आशीर्वाद देती है/

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

① भीष्म साहनी ; सेवानिवृत्ति और विशेषकर वर्तमान में वृद्धों की उपयोगिता व उनके प्रति संतान के दायित्व को दिखाते है।

② "पुत्र - कुपुत्र हो सकता है माता - कुमाता नही हो सकती है" यह बात इन पंक्तियों में देखी जा सकती है

③ संतान द्वारा अपने माता-पिता की उपेक्षा की संस्कृति की यथार्थवादी पड़ताल।

④ 'गोदान' 'बूढ़ी काकी' में प्रेमचन्द भी यही भाव लेकर दिखाते है

⑤ वर्तमान समय में न्यायालय तथा सरकार कानून बनाकर संतानों को उनके माता - पिता के प्रति उनके दायित्व को परिभाषित करते है

⑥ भाषा सरल, सहज, व भावानुकूल

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) धनिया यन्त्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली–महराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

सन्दर्भ :-

प्रस्तुत अवतरण प्रेमचन्द्र कृत महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' से लिया गया है।

प्रसंग व व्याख्या :-

बाप की मृत्यु के बाद 'गोदान' के लिये ब्राह्मण दातादीन को रुपया जाने दान पर धनिया की प्रतिक्रिया है धनिया धर्म, मर्याद, बिरादरी को इतना महत्व नहीं देती है परन्तु, होरी के कहने पर जो भी पैसा उसके पास होता है वह दाता दीन को दे देती है इसी से अपना गोदान करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

① धनियाँ के चरित्र में व्याप्त विद्रोह को देखा जा सकता है।

② मरजाद, जाति, बिरादरी, धर्म के संबंध में कैसे समझौता वादी होरी की असहायता को भी रेखांकित किया जा सकता है।

③ धर्म व जाति के ठेकेदारों लोगों द्वारा आम भी लोगों का शोषण किया जाता है।

④ शोषक वर्ग की भावना शून्यता दातादीन के माध्यम से दिखाई पड़ती है।

⑤ भाषा की हिन्दुस्तानी शैली शब्दावली तद्भव प्रधान।

⑥ "पेट की भाँति उठना," "हंसे हाथ" में प्रेमचन्द का व्यंग्य देखा जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

प्रस्तुत गद्यांश ललित निबन्ध परम्परा के शिरोमणि पुरुष आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के "कुटज" निबन्ध से लिया गया है।

प्रसंग एवं व्याख्या :-

आचार्य द्विवेदी कुटज वृक्ष की विशेषता बताते हुए कहते हैं कि जिसे जीने की इच्छा है उसे कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। जैसे कुटज करता है। पहाड़ पर उगता है, पाताल से पानी खींचता है। वायु लेकर जीता है इसी तरह जीने के लिये अदम्य जीजीविषा को पाना होगा है जहाँ भी जमेगा होगा जीवन के लिए उल्लास खींचता होगा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

① जीवन जीने की शर्त का मौलिक उद्घाटन

② प्रकृति से सीख लेकर मनुष्य को अपने जीवन में हार नहीं मानना चाहिए

③ "कुटज" की विशेषताएं मनुष्य के लिए उपयोगी है

④ जीवन जीने की हर संभव कोशिश की जानी चाहिए

⑤ भाषा में लालित्य है

⑥ ललित निबन्ध की प्रतिनिधि बोलियाँ

⑦ सम्बोधन शैली का प्रयोग

⑧ आत्मपरकता व भावप्रवणता से युक्त

⑨ गद्यात्मकता में भी लयात्मकता

⑩ कल्पनाशीलता का प्रयोग

6/16

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) तो क्या ये मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचन्द के प्रतिनिधि पर्यावपाक रचनात्मक गोदान से ली गयी है।

व्याख्या/— होरी कहता है कि उसके दिन अब मोटे होने के नहीं है क्योंकि वह गरीबी व ऋणग्रस्तता से पीड़ित है। प्रेमचन्द व्यंग्य करते है कि मोटा होना अपने-आप खराबी है क्योंकि बिना किसी के शोषण से मोटा नहीं हुआ जा सकता है इसमें इज्जत भी चली जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

(1) व्यवस्था और गरीबी पर चोट।

(2) 'मोता' प्रतीक है। शोषण का, बेईमानी का। इनमें इज्जत नहीं बचती है।

(3) प्रेमचन्द, होरी के माध्यम से अपनी बात रखते हैं और व्यंग्य शैली में मोता होरी को 'बेहयाई' से जोड़ते हैं।

(4) प्रेमचन्द अपना आदर्श व गांधी प्रभाव भी रखते होते [illegible] तभी है जब सभी सुखी हो।
"जब तक मनुज-मनुज का यह सुख-भाग नहीं सम होगा॥"
- दिनकर

(5) भाषा में व्यंग्य शैली - मोता, बेहयाई

(6) लोक मुहावरे का प्रयोग।

(7) वर्तमान व्यवस्था की असमानता की पोषक है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नारी के प्रति अनुराग से, उसके आश्रय की कामना से ही पुरुष उसे अधीन रख कर उसे आत्म-निर्भर नहीं रहने देता। नारी प्रकृति के विधान से नहीं, समाज के विधान से भोग्य है। प्रकृति में और समाज में भी स्त्री तथा पुरुष अन्योन्याश्रय हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत ~~पंक्ति~~ गद्यांश यशपाल के उपन्यास "दिव्या" से लिया गया है।

माँदिश, भारी - व समाज के सम्बन्धों को बता रहा के नारी का शोषण उसका वस्तुकरण प्रकृति के कारण नहीं बल्कि सामाजिक विधान के कारण है। प्रकृति तो स्त्री व पुरुष दोनों को समान बनाती है। स्त्री व पुरुष दोनों का सम्बन्ध एक दूसरे की पूरकता में है। यह प्रकृति व समाज दोनों में समान है। पुरुष केवल अनुराग तथा आश्रय की कामना में स्त्री की स्वतंत्रता का दमन करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

① स्त्री - पुरुष की अन्योन्याश्रयता में यकीन।

② नारीत्व अर्थात पद्मावत पर भावनावादी प्रभाव व विषमता का विरोध।

③ स्त्री - पुरुष सम्बन्धों में प्रकृति द्वारा प्रदान की समता तथा समाज द्वारा प्रदान की गयी असमानता का वर्णन।

④ स्त्री की पराधीनता के कारणों की पहचान।

⑤ स्त्री व पुरुष सम्बन्धों पर आधुनिक दृष्टिकोण।

⑥ भाषा तत्सम, ऐतिहासिक प्रयोगानुकूल

⑦ भाषा शैली में - व्यंग्य।

⑧ भाषा सरल, व सुबोध।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) आज तक के वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े-टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो ज़रूर गए हैं, पर जैसे ही गोलियाँ चली हैं, उसे वहीं छोड़कर भाग आये हैं- अकेला, निहत्था। वह गोलियों की बौछार से लहूलुहान होता रहा है और ये खुद एक असह्य अपराध बोध से। नहीं, और नहीं; अब तो वे चाहें तो भी शायद ऐसा नहीं कर सकते।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश मन्नू भण्डारी द्वारा रचित 'महाभोज' उपन्यास से लिया गया है।

सवर्णों के अन्दर के अन्तर्द्वन्द्व को दिखाया गया कि वह अपने दोस्त दिनेश को निहत्था छोड़कर किस प्रकार भाग गया था।

रचनात्मक सौन्दर्य :-

(1) अन्तर्मन की आवाज बड़ी तेज होती है इससे कोई बच नहीं सकता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) भाषा प्रवाहानुकूल व पात्रानुसार - तत्सम प्रधान

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation